विद्याभवन , बालिका विद्यापीठ , लखीसराय

विषय-हिंदी ***दिनांक — 28/05/2020***
वर्ग-पंचम ***वर्ग-शिक्षिका— नीतू कुमारी***

पाठ-3 (क़दम्ब का पेड़)

सुप्रभात बच्चों ,
आज की कक्षा में आपको क़दम्ब का पेड़ कविता पढ़ना है। जो की इस प्रकार है। :—

प्रस्तुत है,कविता क़दम्ब का पेड़। कवियित्रि श्री मति सुभद्रा कुमारी चौहान जी की कविता में बहुत ही सरल भाषा का प्रयोग किया गया है। जिसमें कवियित्री अपनी माता जी से कुछ बातें कह रही है। आइए सुनें:—-

यह क़दम्ब का पेड़ अगर माँ, होता यमुना -तीरे।
मैं भी उसपर बैठ कन्हैया, बनता धीरे -धीरे।

ले देती यदि मुझे बाँसुरी ,तुम दो पैसे वाली।
किसी तरह नीचे हो जाती ,यह क़दम्ब की डाली।

तुम्हें नहीं कुछ कहता ,पर मैं चुपके -चुपके आता।
उस नीची डाली से अम्मा, ऊँचे पर चढ़ जाता।

वहीं बैठ फिर बड़े मज़े से, मैं बाँसुरी बजाता।
अम्माँ-अम्माँ कह बंसी, के स्वर में तुम्हें बुलाता

सुन मेरी बंसी को ,माँ तुम इतना ख़ुश हो जाती।
मुझे देखने काम छोड़कर, बाहर तक तुम आती।

तुमको आता देख बाँसुरी रख, मैं चुप हो जाता।
पत्तों में छिपकर धीरे से फिर बाँसुरी बजाता

आज के लिए इतना ही , शेष पंक्तियाँ अगली कक्षा में अध्ययन करेंगे।

गृहकार्य :—

कविता पढ़ें तथा सुंदर अक्षरों में लिखें और याद करें एवं माता व पिता को सुनाएँ।